श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल

राजस्थान का उद्‌बोधन

इंडस्ट्री एकेडेमआ इंटरफेसिंग का
31 वां राष्ट्रीय स्तर कार्यक्रम

दिनांक 08 दिसम्बर, 2020 **समय दोपहर : 12.00 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

भारद्वाज फाउंडेशन जयपुर के संस्थापक अध्यक्ष एवं भारत सरकार की चार सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के पूर्व सीएमडी श्री पी.एम. भारद्वाज जी, मणिपाल यूनिवर्सिटी जयपुर के कुलपति प्रोफेसर जी. के. प्रभु, राजस्थान चेंबर ऑफ कॉमर्स एवं इंडस्ट्री के मानद् सेक्रेटरी जनरल डॉक्टर के.एल. जैन साहब एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षणिक संस्थाओं के शिक्षाविद, उद्योग जगत के प्रतिनिधिगण एवं मणिपाल यूनिवर्सिटी के मेधावी छात्रगण। आप सभी का अभिनंदन और स्वागत है।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि भारद्वाज फाउंडेशन जयपुर द्वारा **इंडस्ट्री एकेडेमआ इंटरफेसिंग** के तहत राष्ट्रीय स्तर पर अभी तक 30 कार्यक्रम हो चुके हैं और आज मणिपाल यूनिवर्सिटी में 31 वां कार्यक्रम राजस्थान चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है।

व्यक्तिगत मैं यह मानता हूं कि शिक्षा ज्ञान हस्तांतरण की साधना है। इस रूप में देखें तो शिक्षण संस्थाएं विद्यार्थी को शिक्षा प्रदान करने के साथ ही ज्ञान प्राप्तकर्ता के रूप में संस्कारित भी करती हैं।

शिक्षा विद्यार्थी की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्त्व का विकास करने वाली सतत प्रक्रिया है। विद्यार्थी जब शिक्षित होता है तो समाज की संस्कृति की निरंतरता को भी बनाए रखने में अपना योगदान देता है।

देश की नई शिक्षा नीति का उद्देश्य यही है कि विद्यार्थी ज्ञान के साथ साथ हुनर में भी पारंगत हो। इसीलिए इस शिक्षा नीति में रोजगारोन्मुखी शिक्षा को कौशल विकास से जोड़ा गया है। यानी विद्यार्थी शिक्षण के आरम्भ में ही इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करे कि बाद में वह अपनी क्षमता का तो उपयोग करे ही साथ ही दूसरों को भी अपने प्राप्त ज्ञान और अनुभव का लाभ दे सके।

यह दौर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का है। कोरोना के इस दौर में संचार प्रौद्योगिकी ही सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस समय में सब कुछ ऑनलाइन हो रहा है। ऐसे में औद्योगिक विकास का भी प्रमुख आधार सूचना और संचार प्रौद्योगिकी ही है। शिक्षण संस्थाओं में ऑनलाइन पढ़ाई के साथ ही सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के बहुविध उपयोग को भी सभी

स्तरों पर सुनिश्चित किया जाना जरूरी है। यह महत्वपूर्ण है कि नई शिक्षा नीति में सूचना प्रौद्योगिकी से विकास पर विशेष जोर दिया गया है।

हमारी शिक्षा प्रणाली में लम्बे समय से प्रैक्टिकल ओरियंटेशन, स्किल बेस्ड एजुकेशन, वोकेशनल एजुकेशन, वैल्यू बेस्ड एजुकेशन व इंडस्ट्री कनेक्ट की कमी महसूस की जा रही थी। इसी से युवाओं को डिग्री लेने के बावजूद रोजगार उपलब्ध नहीं हो पा रहे थे। इस दृष्टि से भी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को मैं बेहद महत्वपूर्ण मानता हूं। इसमें पढ़ाई को सैद्धान्तिक होने की बजाय व्यावहारिक रखे जाने पर मुख्य ध्यान है। पुरानी शिक्षा नीति की व्यवहारिक कमियों को दूर कर इसमें इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी व्यावसायिक कौशल से शिक्षण के दौरान ही जुड़ जाए। उद्योगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इसमें विषय विशेष के अध्ययन के साथ तमाम दूसरे विषयों की बुनियादी समझ विकसित करने पर भी विशेष ध्यान दिया गया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की 'आत्म निर्भर' भारत की सोच को व्यवहार में पूरा करने के लिए यह जरूरी है कि उद्योगों एवं शैक्षणिक संस्थानों के बीच की खाई को मिटाया जाए। देश में प्राकृतिक संसाधनों, ऊर्जावान युवाशक्ति एवं प्रेरणाशील प्रबुद्ध शिक्षकों की कमी नहीं है। जरूरत इस बात की है कि युवा शक्ति का उपयोग देश के नव निर्माण में किया जाए। इसके लिए शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण के साथ–साथ व्यावसायिक कौशल के विकास पर भी गंभीरता से ध्यान दिया जाना चाहिए।

शिक्षण संस्थाओं एवं उद्योगों के समन्वय के साथ ही जरूरी यह भी है कि इस तरह के शोध एवं अनुसंधान पर दोनों मिलकर कार्य करें जिनसे देश के संशाधनों का अधिकतम उपयोग मानव हित में हो सके। उद्योगों को चाहिए कि वे नई तकनीकी के साथ ही नवाचारों को अपनाते हुए अपने उत्पादों के विश्व भर में विपणन की कारगर नीति पर कार्य करे। उद्योगों को सामाजिक भागीदारी के तहत देश के युवा वर्ग की क्षमताओं के उपयोग की प्रभावी नीति पर भी कार्य करने की जरूरत मैं महसूस करता हूं। शैक्षिक संस्थानों को भी चाहिए कि वह ऐसे पाठ्यक्रम बनाए जिससे शिक्षा

प्राप्त छात्र स्वरोजगार की तरफ प्रवृत्त होकर रोजगार पाने के साथ रोजगार देने के योग्य भी हो सके। शिक्षण संस्थाओं में ऐसे शोध और अनुसंधान पर भी ज्यादा जोर दिया जाए जिनमें पर्यावरण संरक्षण के साथ ही मानव जीवन की बेहतरी के लिए कार्य हो सके।

शिक्षण संस्थानों में 'ग्रीन कैंपस–क्लीन कैंपस' का मैं पक्षधर हूं। इसमें उद्योगों को भी सामाजिक दायित्व निभाते हुए आगे आने की जरूरत है। शिक्षा में ऐसे नवाचार निरन्तर होने चाहिए जिनसे विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के साथ–साथ पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन के लिए भी जागरूक रहे। इसलिए मैं ऐसी शिक्षा का सदा ही पक्षधर रहा हूं जिससे शिक्षा न केवल सामाजिक, आर्थिक विकास में मददगार हो बल्कि भविष्य की प्रतिस्पर्धा के लिए भी युवाओं को तैयार कर सके।

वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए कुशल मानव संसाधन बेहद जरूरी है। शिक्षाविदों को उद्योग जगत के साथ मिलकर ऐसे पाठ्यक्रम विकसित करने चाहिए जिससे छात्र और उद्योग जगत साथ मिलकर समाजोपयोगी शोध एवं अनुसंधान को अंजाम दे सके। इससे

दीर्घकालीन राष्ट्र विकास की दिशा में प्रभावी कार्य किया जा सकता है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि भारद्वाज फाउंडेशन, जयपुर मणिपाल यूनिवर्सिटी, जयपुर और राजस्थान चैम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इण्स्ट्री द्वारा अपने समन्वित प्रयासों से 'आत्म निर्भर' भारत की सोच के तहत शिक्षण और उद्योग समन्वय का महती कार्य किया जा रहा है। मैं इसके लिए आप सभी को बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

उम्मीद करता हूं कि आप सभी के समन्वित प्रयासों से समृद्ध–संपन्न भारत के लिए निरन्तर कार्य होगा और हमारा देश वैश्विक सुपर पावर के रूप में अपनी अलग पहचान बनाएगा।

मैं भारद्वाज फाउण्डेशन एवं उनके सहयोगियों, विचारकों के साथ ही इस वेबिनार में भाग ले रहे सभी प्रतिभागियों को इस सुंदर आयोजन के लिए बधाई देता हूं। सभी का आभार।

धन्यवाद। जय हिन्द।